आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण: - कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2583 • उदयपुर, गुरुवार 20 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

झाँसी (उत्तरप्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 जनवरी 2022 को महाराजा अग्रसेन सरस्वती इन्टर कॉलेज, झाँसी में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता श्री संजीव जी बुधौलिया अध्यक्ष श्रीराम कथा आयोजन समिति रहे। शिविर में 240 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 35, केलीपर माप 33, ऑपरेशन चयन 44 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री रवि जी शर्मा (विधायक महोदय), अध्यक्षता श्री रामतीर्थ जी सिंहल (महापौर महोदय), विशिष्ट अतिथि श्री पवनजी जी गौतम (अध्यक्ष जिला पंचायत झाँसी),श्री संजीव जी बुधौलिया (अध्यक्ष श्री रामकथा आयोजन समिति), श्री विद्या प्रकाश जी दुबे (पार्षद), श्रीमान बंटी जी राजा (सदस्य समिति), श्री संतोष जी गुप्ता (प्रधानाचार्य), डॉ नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन) केलीपर्स माप टीम सुश्री नेहा जी (पीएनडॉ), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी, श्री हरीश जी रावत, (सहायक), श्री हितेश जी सेन (रसीद), श्री आदित्य जी (ऐंकर) ने भी सेवायें दी।

कैथल (हरियाणा), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को एवं सत्य साक्षी संघ, लोढ़ा अर्पाटमेंट के पास, एस. बी. कॉलोनी कुकटपल्ली हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता सत्य साक्षी संघ कुकटपल्ली हैदराबाद रहा। शिविर में 150 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 24, केलीपर माप 21 की सेवा हुई व 08 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती जया रमेश जी जागीरदार (समाजसेविका), अध्यक्षता श्री रामया (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री पारस जी जागीरदार जी (समाजसेवी), श्रीमती अल्का जी चौधरी (शाखा संयोजिका), श्री धारीगी जागीरदार जी (समाजसेवी), डॉ. अजुमुदीन जी के निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री आर.एन.ठाकुर (पीएनडॉ), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश त्रिपाठी जी श्री बहादुर सिंह (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 10.00 बजे से

श्री लोकमान्य तिलक कम्यूनिटी हॉल, तिलक नगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश

अग्रवाल भवन, महाराजा अग्रसेन भवन, गांधी रोड, रेलवे स्टेशन रोड, देहरादून

सैनी धर्मशाला, सर्या मोहल्ला, जाजर रोड, रोहतक, हरियाणा

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

फ्लोरेंस फिजियोथैरेपी एवं वैलनेस क्लिनिक बदलापुर पड़ाव जोनपुर, उ.प्र.

रुपाली डेवलपर्स प्रा. लि. काली चौरा, रैलपुर, आजमगढ़, उ.प्र.

चैन्नई, तमिलनाडु

कल्याण मण्डप, मेन रोड, सिम्लीगुडा, उड़ीसा

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

दिव्यांगों के हित में दिव्य संकल्प

विजन डॉक्यूमेंट में वर्ष 2022 के अन्त तक दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगों के लिए उदयपुर में सेंट्रल फेबिक्रेशन यूनिट स्थापित किया जाना भी शामिल है। इससे प्रतिदिन सैकड़ो दिव्यांगग्रस्त व अंगविहिन जनों को अत्याधुनिक सुविधाजनक कृत्रिम हाथ–पैर मिलने लगेंगे।

संस्थान इसके माध्यम से भारत भर के 50 हजार दिव्यांगों को प्रतिवर्ष मदद पहुंचा सकेगा। संस्थान के वर्तमान सेवा कार्यो की जानकारी देते हुए सेवा प्रशांत जी मैया के सानिध्य में जयपुर में व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल वे सानिध्य में उदयपुर मुख्यालय पर बड़ी संख्या में जरूरतमंदों को ट्राइसाइकल, व्हीलचेयर व सहायक उपकरण बांटे गए तथा 40 को कृत्रिम अंग लगाए गए। संस्थान की सूरत, हैदराबाद, लखनऊ, मथुरा, बड़ौदा, अहमदाबाद, मुंबई, लुधियाना, दिल्ली, नागपुर सहित 22 शाखाओं में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयेजित हुए और वहां के जिला प्रशासनिक अधिकारियों से भेटकर दिव्यांगता के क्षेत्र में विशेष कार्य करने की पहल की गई।

दिव्यांगों की सेवाओं में सोशल कॉरपोरेट रिस्पॉनिसबिलिटी के तहत ए. आर. टी. हाउसिंग एवं राइसो इंडिया लिमिटेड ने भी अपना सहयोग प्रदान किया।

नारायण सेवा संस्थान का साथ मिला अब मैं खुश हूं !

जन्म के 6 माह बाद ही पोलियो की शिकार हुई स्वाति (22) नारायण सेवा संस्थान में पिछले वर्ष पोलियो केरेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खड़ी होती और चलती है। गोरखापुर (उप्र) में बीटीएस की छात्रा स्वाति सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई हैं।

उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूँ तो रो पड़ती हूँ। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉस्पीटल में लम्बा इलाज भी चला, लेकिन फायदा नहीं हुआ। घिसकर चलना ही उनकी नियति था। नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो गत वर्ष नवम्बर में यहाँ आई और डॉ. साहब ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से वे खड़ी भी होती हैं व बिना सहारे चलती भी हैं। पाँव का टेढ़ापन भी काफी ठीक हो गया है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

लक्ष्मण ने जैसे कहते श्वास ही छोड़ी। एक कैकेयी तूने तो बहुत अनर्थ किया रे। अरे मंथरा तूं तो पापिन बन गई रे। अरे इस सुन्दर वन में तूने आग लगा दी अयोध्या में आग लगा दी रे मंथरा, ऐसे लक्ष्मण जी ने निःश्वास से सांस छोड़ा और माता ने क्या सोचा– जांकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। कौशल्या माता जी को अभी तो कुछ विदित ही नहीं था। अभी राम भगवान अब बोलेगे, राम भगवान ने कुछ कहा भी नहीं था। मन ही मन में बाते हो रही थी माता जी ने सोचा आज मेरे राम का राजतिलक होगा।

बोले श्रीरघुवर यों,
धर्म धीर नवघन रमजो।
माँ आज .तार्थ हुआ,
स्वार्थ स्वयं परमार्थ हुआ।

अब पारब्रह्म परमात्मा ने अमृतमयी वाणी से सुना, रे माते आज स्वार्थी परम् अर्थ कहते स्व का अर्थ स्वार्थ, स्वार्थ स्वयं परमार्थ हुआ।

पावन कारक जीवन का,
मुझको वास मिला वन का।
जाता हूँ मैं अभी वहाँ,
राज्य करे भरत यहाँ।

कुछ ही शब्दों में रामचन्द्र भगवान ने परमानन्द भगवान ने, राघवेन्द्र भगवान ने कौशल राज भगवान ने सब कुछ कह दिया।

माँ को प्रत्येयभिन्न हुआ इसलिए दुखभिन्न हुआ।
समझी सीता किन्तु सभी, झूठ कहेंगे प्रभु ना कभी

माँ को तो कुछ समझ में ही नहीं आया। कहते है काठ जैसी बनी रह गयी। कभी–कभी ऐसी बात होती है कहाँ तो राजतिलक होने वाला है। और कहाँ मेरा राम राज्य करेंगे, भरत यहाँ माँ बहुत आश्चर्य चकित हो गई। समझ में नहीं आया लेकिन सीता जी समझ गई। कुछ ना कुछ तो हुआ है। भरत जी राज्य करेंगे। मेरे देवर जी राज करेंगे क्या? अपने बड़े भाई के बिना वो रह पायेगे। सीता जी सोच रही थी, क्या मैं राम के साथ वन जाये बिना रह पाऊँगी। क्या मेरे प्राण रह पायेंगे, क्या मेरी देह रह पायेगी, और माता ने पूछा– बेटा लक्ष्मण तूं कहेगा। क्या तुझसे कोई दोश हुआ हैं? जो तुझ पर ये रोश हुआ।

यदि मेरे पतिदेव और तुम्हारे पिताजी दशरथ जी ने कुछ गलती से तुम्हे दण्ड़ दिया होगा। तभी मैं तुम्हारी ओर से क्षमा मांग लूंगी।

सम्पादकीय

जीवन को गुजारना भी संभव है तथा जीना भी। गुजारने का आशय है कि जो चल रहा है वह बस घिसटता रहे, जीवन उदासीनता व शिकायतों से भरा रहे। ऐसी स्थिति में भी झिकझिक करके भी जीवन गुजर जाता है। दूसरी ओर यह भाव रहता है कि मानव जीवन जैसी दुर्लभ योनि प्राप्त हुई है तो इस सलीके से जीयें। अपने लिये जीये, ओरों के लिये जीयें। जीवन दोनों दशाओं में व्यतीत हो जाता है पर गुजारने में मायूसी छाई रहती है, दुःखों का रोना चलता रहता है, असंतुष्टि का राग हर पल अलापा जाता है। जबकि जीने की तमन्ना व्यक्ति की सोच में बदलाव ला देती है। वह जीवन में संतुष्ट तो होता ही पर जीवन को शृंगारित करने के हर अवसर को खोज लेता है। वह अभाव को भी उत्सव में परिवर्तित कर देता है। ऐसी जीवन ही समाज व देश में योगदान करता है।

कुछ काव्यमय

भारी मन से जीना
इसे जीवन कैसे कहें ?
वे भूल जाते हैं कि
दुनिया में कैसे रहें ?
जीना तो आनन्द का उद्भव
और संतोष की खान है।
ऐसे जीवन के लिए ही
ईश्वर ने रचे इंसान है।

- बरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सेवा बने दिनचर्या का अंग

सुबह जल्दी, बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना और भी कई काम। उधर दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक कड़ाहियों के मांजनें और भट्टी ठंडी करने तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है।

यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट के कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाईश न हो, उदाहरणार्थ– निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा– "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा– अथवा इतने घंटों की कार्य– हानि के अलावा

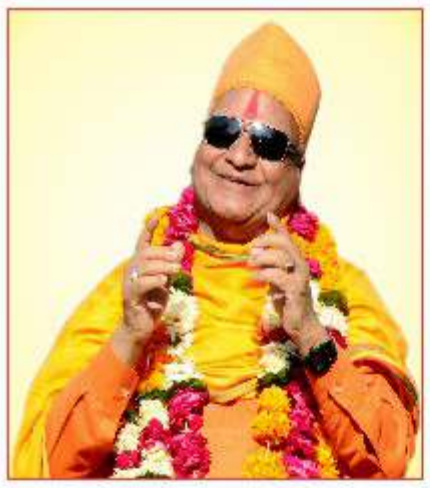

कुछ भी हाथ न लगेगा।" उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी –"आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरांत भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं –धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का –संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गई है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें "अतिरिक्त कार्य" लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है।

आइये, हम अपने सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

–कैलाश 'मानव'

अधिकारों का उपयोग

एक और प्रसंग आता है कि एक अत्यन्त निर्दयी और क्रूर राजा था। दूसरों को पीड़ा देने में उसको आनन्द आता था। उसका आदेश था कि उसके राज्य में एक या दो व्यक्तियों को फांसी लगनी ही चाहिए। उसके इस व्यवहार से प्रजा बहुत दुखी हो गयी। एक दिन उस राजा के राज्य के कुछ वरिष्ठजन इस समस्या को लेकर एक वरिष्ठ संत के पास पहुँचे। बोले महाराज हमारी रक्षा कीजिये। यदि राजा का ये क्रम जारी रहा तो पूरा नगर खाली हो

जायेगा। संत भी काफी दिनों से ये ध्येय सुन रहे हैं।

वे अगले ही दिन दरबार में जा पहुँचे। राजा ने उनका स्वागत किया और आने का प्रयोजन पूछा। संत बोले मैं आपसे एक प्रश्न करने आया हूँ। यदि आप शिकार खेलते हुए जंगल में जायें और मार्ग भूलकर भटकने लगे और प्यास के मारे आपके प्राण निकलने लगे। ऐसे में कोई व्यक्ति आपको सड़ा गला पानी लाकर आपको एक पात्र भर पानी पिलायें, कि तुम आधा राज्य दोगे तो वो पानी पिलायेगा। राजा ने कहा प्राण बचाने के लिये आधा राज्य देना ही होगा। संत बोले अगर वो गंधा पानी पीकर तुम बीमार हो जाओ और तुम्हारे प्राणों पर संकट आ जाये, तब कोई वैद्य तुम्हारे प्राण बचाने के लिये शेष आधा राज्य मांग ले, तो क्या करोगे? राजा ने तत् क्षण कहा– प्राण बचाने के लिये वो आधा राज्य भी दे दूँगा।

जीवन ही नहीं तो राज्य कैसा? संत बोले अपने प्राणों की रक्षार्थ आप अपना राज्य लुटा सकते हैं तो दूसरों के प्राण लेते क्यों हैं? संत का यह तर्क सुनकर राजा को चेतना आ गयी। वह सुधर गया। इस प्रसंग का सार यह है कि अपने अधिकारों का उपयोग लोकहित एवं विवेक सम्मत ढंग से किया जाना चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

2005 में ही यूरोपीय देशों की यात्रा की। यह भारतीय यात्रियों के समूह की संचालित यात्रा थी। कैलाश भी इसी में शामिल हो गया, अपने साथ नारायण सेवा की गतिविधियों के पत्रक तथा चित्र ले लिये। यात्रा में सभी शहरों में भारतीय रेस्टोरेन्टों में ही इनके खाने पीने की व्यवस्था होती थी। कैलाश इन रेस्टोरेन्टों के मालिकों या मैनेजरों से 4–5 मिनट का समय मांगता और अपनी बात बताता। वह सबको कहता दिया जलाने आया हूं ,आप संस्था के संरक्षक बन कर इसकी जोत विदेशों में भी प्रज्ज्वलित रख सकते हो। ये लोग चित्रों व साहित्य देखकर प्रभावित हो जाते और संरक्षक बनने की हामी भर देते। कैलाश उनसे स्पष्ट कर देता है कि, आपका पैसा लेने नहीं आया हूं– आपका दिल लेने आया हूं।

कैलाश का यह विचार था कि यूरोप के विभिन्न नगरों के प्रभावशाली लोगों के नाम यदि संस्था से जुड़ जायें तो इसका संस्था की प्रतिष्ठा पर बहुत असर पड़ेगा। लंदन, हॉलेण्ड, पेरिस, बेल्जीयम, रोम, वेटिकन, स्विजरलैण्ड, जहां जहां यात्रा गई, वहां वहां एक–एक दो–दो संरक्षक बन गये। भारत आकर जब इनके नाम पत्रक में छापे तो कैलाश का सीना गर्व से फूल गया। कालान्तर में इन संरक्षकों ने समूचे यूरोप में नारायण सेवा की लोकप्रियता का पथ प्रशस्त करने में अमूल्य योगदान दिया।

यात्रा के दौरान पीसा की मीनार भी देखी। इतनी विशाल मीनार को एक तरफ झुकी देख कर सब अचंभित थे। कैलाश सोच रहा था कि इतना झुकने के बावजूद भी यह स्थित है इसका मतलब असंभव कुछ भी नहीं। असंभव भी संभव है। इटली में ही सभी यात्रियों को गांव के एक स्कूल में ले जाया गया। यहां सबके लिये खाने का आयोजन था मगर मांसाहारी था। इनके दल में 20–25 लोग विशुद्ध शाकाहारी थे, यह बात उनको बताई तो वे बोले– हमें पहले बताया ही नहीं गया अन्यथा हम शाकाहारी बना देते, कोई बात नहीं अब भी बना देते हैं। हमारे टूर संचालको ने मना कर दिया कि इतना समय नहीं है तो सभी शाकाहारियों ने विरोध कर दिया, कहने लगे– तो क्या हम भूखे रहेंगे ? आखिरकार शाकाहारी भोजन बना, सबने खाया, उसके बाद ही आगे बढ़े।

अंश - 213

रवित हुआ कुण्ठा और दिव्यांगता से मुक्त

रवित कुमार (26) नेपुर बदायूं के निवासी हैं। इने पिता राजकीय सेवा में है... परिवार में 6 सदस्य हैं। रवित ने बताया कि दिव्यांग होने के कारण मैं तनावग्रस्त रहने लगा। घर में मेरे अन्य भाई–बहिन सभी काम आराम से कर लेते थे पर मैं दिव्यांगता से मन ही मन घुटता रहता।

टी.वी. पर देखे विज्ञापन पर मैं परिजनों के साथ उदयपुर आया.।

ऑपरेशन करवाया तो जिन्दगी में उम्मीद का अकुंरण हुआ.... मैं जीने के प्रति सोचने लगा.... मुझे भी दूसरे युवाओं की तरह कुछ काम करना चाहिए..... ऐसा सोच ही रहा था कि कोरोना लॉकडाउन लग गया। उसी दौरान नारायण सेवा संस्थान ने ऑनलाइन मोबाइल रिपेयरिंग क्लास आरम्भ की। मैंने बिना वक्त खोए पंजीयन करवा लिया।

पूरी शिददत से कोर्स किया परीक्षा में आए नम्बरों से मुझे यकीन हो गया कि मैं मोबाइल ठीक करना सीख गया हूं। अब घर से ही पड़ौसियों के मोबाइल सही करने लगा हूं... अपनी खुशी को शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा हूं। नारायण सेवा ने मेरी जिन्दगी को ही पांवों पर ही खड़ा नहीं किया बल्कि मुझे कुंठा से बाहर निकाल मुझे जीने का हौसला भी दिया। मैं संस्था का धन्यवाद करता हूं।